हज & उमरह (Roman Hindi)

Disclaimer:

Arshad Basheer madani ke urdu books ko Roman English mai lane wale ahbab Mubarakbadi ke mustahiq hai ke unoun ne asan kia urdu reading Na janne Waloun ke liye

الحمد لله

فجزاكم الله خيرا

Note : arshad basheer madani ne Word to Word check nahi kia Kiunke bohut books ko roman Kia gaya un sab ko Check karna asan nahi, time ka commitment deegar Urdu books Aur syllabus par laga huva hai is liye badi mazirat ke sat arz hai ke jahan kahin apko pronunciation ya talaffuz mai Diqqat lage Urdu Janne Waloun se asal Kitab ki taraf rujoo farmaen in sha Allaah in sha Allaaah

Askislampedia ki Team ka shukriya ke Roman mai book lane mai madad faramee

Khas tour se

Riaz bhai , shaikh abdullah Umeri, faheem iqbal , Mushtaq ahmed Aur baz sisters bhi hain jo madad kie Aur kuch brothers bhi madad kie Likin ijazat nahi hai ke unka naam zikr Kia jae Allaah qabool farmae sab ki mahant

****

Ameen

Shukriya

Shoba e nashro ishaat,

Askislampedia

अलहम्दुलिल्लाह रोमन हिंदी (Roman Hindi) में हज व उमरह के अरकान, वाजिबात, शर्तें, ममनूआत, जायज़ काम, फज़ायेल, नसीहतें, अहकामात, मसायेल और तरीक़ेकार पर मुश्तमिल आसान किताब

हज & उमरह

कुरआन और सुन्नत की रौशनी में

जमा व तरतीब

अरशद बशीर उमरी मदनी हफिज़हुल्लाह

सबेखा मुदर्रिस, मस्जिद ए नबवी व हुज्जाज गैड

MBA, M.Phil, Pursuing Ph.D from Switzerland.

Director - iPlus TV

नज़रे सानी

उस्ताज़ुल असातिज़ह फ़कीह व मुहद्दिस

फ़ज़ीलतुश्शेख अनीस उर रहमान आज़मी उमरी मदनी हफिज़हुल्लाह

फ़ज़ीलतुश्शेख ताहा सईद खालिद उमरी मदनी हफिज़हुल्लाह

सबेख मुफ़्ती मौसिमे हज, हरम ए मक्की, सौदी अरब

हुरुफे आग़ाज़

अलहम्दुलिल्लाह वस्सलातु वस्सलाम अला रसूलिल्लाह व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मयीन, अम्मा बाद!

हज, इस्लाम के पाँच अरकान में से एक अहम रुकुन है| (सूरह आले इमरान 3:97 & सहीह बुखारी, हदीस नंबर : 8)|

अल्लाह ताला के फ़र्ज़ करदा इबादतों में हज एक ऐसी इबादत है, जिस के ज़रिये, बंदा अपने पैदा करने वाले अल्लाह की रज़ा पाने के लिए तन, मन व धन लगा देता है| ताकि उस का रब उससे राज़ी और खुश हो जाये|

किसी भी अमल के क़ुबूल होने के लिए दो शर्तें है : (1) इख्लास यानी सारे आमाल अल्लाह ताला को राज़ी करने के लिए करना|

(2) वो काम अल्लाह और उसके रसूल ﷺ के बताये हुए तरीके पर करना| इन दो शर्तों का खुलासा ये है कि, हाजी शिर्क, रियाकारी, बिदत और हर किसम की नाफ़रमानी से लाज़मी तौर पर बचे और अल्लाह ताला और उसके रसूल की इतात को हत्तल मकदूर बजा लाये|

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया : "खुज़ू अन्नी मनासिक कुम" तुम लोग मुझ से हज का तरीका सीखो, ये किताब्चा दर असल उसी हुकुम पर हाजियों को अमल की सहूलत के लिए तयार किया गया है|

सबबे तालीफ़ : मौसमे हज में सौदी अरब के हरमैन इदारे की जानिब से मंज़ूर शुदा तसरीह की बुनयाद पर मस्जिद ए नबवी के दामन में बयान करने और हुज्जाज किराम की बाज़ाब्ता रहनुमाई करने का अल्लाह ताला ने मुझे मौका इनायत फ़रमाया| जिस दौरान हुज्जाज किराम की परेशानियों का इल्म हुआ और अहकाम ए हज व उमरह से न वाक़िफ़ हुज्जाज किराम की तकलीफ का अंदाज़ा हुआ तो इस उनवान के तहत अवामी सहूलत के लिए आसान तालीफ़ का ख़याल पुख्ता हो गया, अलहम्दुलिल्लाह|

खुसूसियत : ये किताब दर असल हज व उमरह के तमाम अहकाम, मसायेल, आमाल, फज़ायेल, सलीस ज़बान, हिट पॉइंट्स, नम्बरात, तसावीर और सुर्ख़ियों की शकल में आसान से आसान करते हुए तयार की गयी है, ताके हज और उमरह करने वाले इसको गैड के तौर पर अपने साथ रखे और इस से हर जगह फ़ायदा उठायें|

हदिये तश्केरा : इस किताब की तकमील में मदद करने वाले सारे ही उलमा किराम, मुआवनीन और रुखफा का शुक्रिया अदा करता हूँ| बिल मखसूस शेख अनीस उर रहमान आज़मी उमरी मदनी, शेख ताहा सईद खालिद उमरी मदनी और आस्क इस्लाम पीडिया (www.AskIslamPedia.com) से मुंसलिक सभी अहबाब बिल खुसूस जनाब मंसूर साहब, जनाब रफ़ी साहब, शेख अब्दुल्लाह उमरी, शेख उस्मान उमरी, शेख नूरुद्दीन उमरी, शेख अब्दुल वासे उमरी (Ph.D), शेख मोईनुद्दीन उमरी, शेख अब्दुर रहमान उमरी मदनी, मुहम्मद माजिद उमरी, मुहम्मद मुजाहिद उमरी, जनाब अब्दुल्लाह बा ज़ुबैर और उनके अहले खाना और उसको रोमन english में मुन्तकिल करने वाले जनाब फहीम साहब, जनाब जावीद साहब, डाक्टर जाकी उर रहमान और मोहतरमा नसरीन फातिमा जौजे अरशद बशीर उमरी मदनी का

ममनून व मशकूर हूँ और इसी तरह किताब को video और Mobile app में मुन्तकिल करने में जनाब निजामुद्दीन, जनाब अब्दुर रहमान, मुश्ताक़ अहमद और इश्तियाक़ अहमद का ममनून व मशकूर हूँ| अल्लाह ताला इन सब को जज़ाये खैर अता फरमायें - आमीन|

मुझे इस काबिल बनाने वाले जामिया दारुस सलाम उमराबाद और जामिया इस्लामिया मदीना मुनव्वरा के तमाम असातेज़ा और ज़िम्मेदारों का मैं बेहद ममनून व मशकूर हूँ| अल्लाह ताला हमारे और उन सब के मीज़ने हसनात को सखील फरमा दे, आमीन|

दुआ : आखिर में दुआ गों हूँ के अल्लाह ताला इबादत के इस अहम् फरायेज़ की अदायगी में आसानी पैदा करने की इस काविश को क़ुबूल फरमाकर ज़ादे आखिरत बना दे| और मेरे लिए, मेरे वालिदैन के लिए, खानदान और मुआविनीन के लिए दुनिया और आखिरत में नजात का बाअस बना दे, आमीन|

वस्सलामु अलैकुम

हाजियों से दुआओं का दरख्वास्त गुज़ार

अरशद बशीर उमरी मदनी

किताब के ताल्लुक़ से मुस्तनद इदारों के तास्सूरात

1. सौदी अरब के मशहूर इस्लामी इदारा islamhouse.com की तरफ से इस किताब को “सब से बेहतर तालीफ़” शुमार करते हुए यू कहा गया है के “पेशे नज़र किताब्चा में शेख हाफ़िज़ अरशद बशीर मदनी - हफिज़हुल्लाह - ने हज व उमरह के फज़ायेल, आमाल, अहकाम व मसायेल वगैरा को निहायत ही आम फहम और सलीस ज़बान में, नुकात, नम्बरात, तसावीर और सुर्ख़ियों की शकल में तरतीब देने की बेहतरीन काविश फरमाई है, ताके जायरीन हरमैन शरीफैन इस किताबचे को बतौर गैड अपने साथ रख कर आसानी से इस्तेफ़ादा कर सके| नाचीज़ की नाकिस राय के मुताबिख उर्दू ज़बान में तस्वीरी शकल में हज व उमरह की रहनुमाई के सिलसिले में सब से बेहतर तालीफ़ है|”

2 अलहम्दुलिल्लाह पाकिस्तान के मशहूर इस्लामी इदारे kitabosunnat.com ने भी इस किताब की ताईद की है|

3 “अलहम्दुलिल्लाह ये किताब वाकई गैड है” (फज़ीलतुश्शेख अनीस उर रहमान आज़मी उमरी मदनी हफिज़हुल्लाह)

4 “अलहम्दुलिल्लाह ये किताब मुफीद है” (फजीलतुश्शेख ताहा सईद खालिद उमरी मदनी हफिज़हुल्लाह)

सुर्खियाँ सफा नंबर

हज व उमरह की चक लिस्ट 2

हज व उमरह के अरकान, वाजिबात, ममनूआत और जायेज़ काम की तफ्सील 4

उमरह का तरीका 9

हज का तरीका 22

मदीना तय्यिबा का मुबारक सफ़र 36

हज व उमरह का तरीका, रोमन अंग्रेजी में 55

हज व उमरह की मुकम्मिल दुआयें 56

अल्लाह के अस्मा व हुसना 60

उमरह चक लिस्ट

1. तहारत और सफाई का ख़याल रखते हुए क्या आप ने मीकात पहुंचकर आवाज़ (अल्लाहुम्म लब्बैक उम्रतन) कहते हुए उमरह की नीयत कर ली?
2. आप इहराम बाँध चुके है? उम्मीद के इस के आदाब का ख़याल रखा होगा|
3. क्या आप को तल्बिया याद है? लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन नेमत, लकवल मुल्क, ला शरीक लक|

4. **क्या आप मस्जिद ए हराम में दाखिल होने के आदाब और दुआ का इहतेमाम कर रहे है?**
5. **तवाफ खुदूम (पहला तवाफ) शुरू करने से पहले हालाते इज्तेबा इख्तियार करना न भूलें|**
6. **क्या आप ने हजरे अस्वद को बोसा देकर या छूकर या इशारा करके तवाफ शुरू किया है?**
7. **क्या आप जानते है के रमल (पहले के तीन चक्कर तेज़ चलना) मर्दों के लिए है, औरतों के लिए नहीं|**
8. **क्या आप ने तवाफ के सात चक्कर पूरे करके दो रकात नमाज़ अदा की? (याद रहे कि हर चक्कर की कोई अलग दुआ साबित नहीं| अलबत्ता कुरानी और नबवी दुआयें और कुरआन मजीद की तिलावत कर सकते है)| उम्मीद कि आप ने रुकुने यमनी और हजरे अस्वद के दरमियान हर चक्कर में, "रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतव वफिल आखिरति हसनतव वखिना अज़ाबन्नार" पढ़ी होगी|**

9. **तवाफ (सात चक्कर) के बाद दो रकात मखामे इब्राहीम या जहाँ जगह मिले पढ़ना न भूले| क्या आप ने नमाज़ के बाद आबे ज़म ज़म पिया?**
10. **क्या आप सफा से सई शुरू करके सात चक्कर पूरे किये? आदाब और दुआयें न भूलें| मर्द हज़रात हरी निशानियों के हुदूद में तेज़ चलना न भूले|**
11. **सई के बाद मर्दों को सारे बाल निकालना होगा, जबके औरतों को एक पोर बाल निकालना काफी है|**

हज़ चक लिस्ट

1. **क्या आप 8 ज़ुल हिज्जाह को हज के लिए इहराम बाँध चुके है? (अपनी रिहायशी गाह या मीकात से)**
2. **क्या आप ने दिल में हज की नीयत करने के बाद 'अल्लाहुम्म लब्बैक हज्जतन' के अलफ़ाज़ ज़बानी अदा किये है? तल्बिया मुसलसल जारी रखे|**

3. **क्या आप ने ज़ुहर की नमाज़ क़सर के साथ मिना में अदा की है? (इसी तरह बकिया नमाज़ें भी अपने वक़्त में)**
4. **क्या आप ने 8 ज़ुल हिज्जाह की रात मिना में गुज़ारी है?**
5. **याद रहे 9 ज़ुल हिज्जाह को सूरज निकलने के बाद तल्बिया, तकबीर व तहलील कहते हुए मिना से अरफात रावाना होना है|**
6. **याद रहे ज़ुहर के वक़्त मैदाने अरफात में इमामे हज का खुत्बा सुनना है (अगर मुमकिन हो)|**
7. **खुत्बा के बाद ज़ुहर के वक़्त ज़ुहर और असर बा जमात जमा (एक साथ) और क़सर के साथ अदा करना है|**
8. **अरफा के रोज़ दुआओं को कसरत से पढें|**
9. **ज़ुहर व असर की नमाज़ें अदा करने के बाद अरफात में क़िबला रुख हो कर दुआयें मांगनी चाहिए|**

10. **गुरूबे आफताब के बाद नमाज़े मगरिब अदा किये बगैर सुकून व विखार के साथ तल्बिया कहते हुए मुज़दलिफा रवाना हो जाना चाहिए|**
11. **मुज़दलिफा में नमाज़े मगरिब व इशा, जमा व कसर के साथ अदा कीजिये|**
12. **ये रात मुज़दलिफा में आराम करते हुए गुज़ारे|**
13. **10 ज़ुल हिज्जाह को तुलूये आफताब से क़ब्ल सुकून व विकार के साथ तल्बिया कहते हुए मुज़दलिफा से मिना रवाना हो जाये|**
14. **तुलूये आफताब के बाद जमरह उख्बा (बड़ा) को सात कंकरियां मारे|**
15. **रमी (कंकरियां मारना) के बाद कुरबानी कीजिये|**
16. **कुरबानी के बाद हलक़ (सर मुन्डाना) या तक़सीर (Hair Cutting) कीजिये और इहराम**

की चादरें निकाल कर अपना आम लिबास पहनते हुए हलाल हो जाये|

17. मिना से मक्का मुकर्रमा जाकर तवाफ़ ए इफाज़ा कीजिये, ज़म ज़म पी लीजिये, सई कीजिये और मिना वापिस आ जाये|

18. अय्यामे तशरीक़ (10 ता 13 ज़ुल हिज्जाह) की रातें मिना में गुज़ारना चाहिए| और उन दिनों में ज़वाले आफताब के बाद तीन जमरात को कंकरियां मारना चाहिए|

19. 12 ज़ुल हिज्जाह को गुरूबे आफताब से कब्ल मिना से निकल जाये या 13 ज़ुल हिज्जाह की रात मिना में गुज़ार कर ज़वाल के बाद रमी करके मिना से निकल जाये|

20. मक्का छोड़ने से पहले तवाफे विदा करना न भूले|

हज व उमरह के अरकान, वाजिबात, ममनूआत और जायेज़ कामों की तफ्सील

अरकान और वाजिबात में फर्क़

नोट : रुकुन के बगैर उमरह या हज मुकम्मिल न होगा|

नोट : जान बूझ कर या अनजाने में वाजिब छूट जाये तो दम (बकरा ज़बह करना) से इसकी तलाफी हो सकती है| जिसको हुदूदे हरम में ज़बह करते हुए फुकरा ए मक्का में तकसीम कर दिया जाये| हाजी खुद इस से कुछ नहीं खा सकता| [1]

उमरह के अरकान

1 इहराम बांधना यानी उमरह में दाखिल होने की दिल से निय्यत करना| [2]

2 बैतुल्लाह का तवाफ करना| [3]

3 सफा व मरवा की सई करना| [4]

उमरह के वाजिबात

1 मीकात से इहराम बांधकर अलफ़ाज़ के ज़रिये निय्यत करना|

2 सारे सर के बाल कटवाना या मुंडवाना| [5]

नोट : बाज़ उलमा के नज़दीक ये अरकान में से है|

हज के अरकान

1. इहराम बांधना यानी हज में दाखिल होने की निय्यत करना|

2. 9 ज़ुल हिज्जाह को ज़वाल के बाद मैदान ए अरफात में ठहरना|

3. 10 ज़ुल हिज्जाह या उसके बाद तवाफ ए ज़ियारत करना|

4. सफा और मरवा की सई करना|

1 मुअत्ता मालिक - किताबुल हज, बाबु मा यफअलु मन नसिय मिन नुसुकिही शैअन : 940

2 सहीह मुस्लिम - किताबुल हज, बाबुन फिल इफ्रादी वल क़िरानी बिल हज्जी वल उमरती - हदीस : 1232

3. सहीह मुस्लिम - किताबुल हज, बाबु जवाज़िद तवाफी अला बईरिन व गैरिही - हदीस : 1275

4. सहीहुल बुखारी - किताबुल हज, अब्वाबुल उमरती - बाबु मतायहिल्लुल मुअतमिरू - हदीस - 1793

5. सुननुन नसाई - किताबुल मनासिकी - इशआरुल हद्यी - ऐन यक्सिरू अल मुअतमिरू - हदीस : 2987 (सहीह)

हज के वाजिबात

1. अपनी रिहायश गाह या मीकात से इहराम बाँध कर अल्फाज़ के ज़रिये निय्यत करना|

2. 9 ज़ुल हिज्जाह को मगरिब तक अरफात में ठहरना|

3. 10 ज़ुल हिज्जाह की रात मुज़दलिफा में गुज़ारना|

4. 10 ज़ुल हिज्जाह को कुरबानी के बाद सारे सर के बाल मुंडवाना या कटवाना|

नोट : बाज़ उलमा के नज़दीक ये अरकान में से है|

5. 10 ज़ुल हिज्जाह को सिर्फ बड़े जमरह और 11,12 ज़ुल हिज्जाह के दिन तीनो जमरात को बिल तरतीब अल्लाहु अकबर कह कर सात सात कंकरियां मारना और 13 ज़ुल हिज्जाह की रात मिना में गुज़ारने वाला उस दिन तीनो जमरात को कंकरियां मारे|

6. 11 और 12 ज़ुल हिज्जाह की रात मिना में गुज़ारना और 13 की रात भी मिना में गुज़ारी जा सकती है|

7. तवाफ ए विदा करना|

हज की शर्तें

फर्ज़ियते हज की शर्तें :

1. इस्लाम : इसलिए कि काफिर हज करे भी तो उसका हज क़ुबूल नहीं होगा|

2. बुलूगत : इसलिए कि ना बालिग़ बच्चा और बच्ची पर हज फ़र्ज़ नहीं| और अगर बच्चे ने बुलूगत से कब्ल हज कर भी लिया तो उसका हज सही है और ये नफली हज होगा, लेकिन बालिग़ होने के बाद मुस्ततीअ होने की सूरत में उसे फ़र्ज़ हज की अदायगी करनी होगी| क्यों कि बुलूगत से कब्ल अदा किया गए हज की फर्ज़ियत ख़तम नहीं होती|

3. अक़्ल : क्यों कि पागल शख्स निय्यत और दूसरे अरकान की अदायगी से आजिज़ होता है|

4. इस्तेतात : जिसके पास बैतुल्लाह तक पहुँचने की माली इस्तेतात हो| अगर बदनी तौर पर इस्तेतात न हो तो किसी और से हज करवा ले|

नोट : औरत के लिए महरम का होना इस्तेतात की शर्त में शामिल है| अगर उसका महरम नहीं तो उस पर हज फ़र्ज़ नहीं होगा और अगर कोई औरत बगैर महरम के हज करे तो हज तो सही होगा लेकिन वो गुनहगार होगी, तौबा व इस्तेग्फार करे|

हालत ए इहराम में ममनू काम और उनका कफ्फारा

ममनू काम

1 सर या जिस्म के किसी हिस्से से जान बूझ कर बाल उखाड़ना, काटना या मुंडवाना|

2. नाखुन तराशना|

3. खुशबू लगाना (इस से मुराद चाय या शरबत की खुशबू नहीं, बलके अतरियात मुराद है)|

4. मर्द का सर को टोपी या पगड़ी या किसी ऐसी चीज़ से ढापना जो सर से लग जाये|

5. मर्द का जिस्मानी ढाँचे के मुताबिख बने हुए या सिलाई किये हुए कपडे पहनना (जैसे शलवार कमीज़, बनयान, कोट, स्वेटर, पतलून, पैजामा वगैरा) जबके औरत का दस्ताना और निकाब ओढना| [(1)]

कफ्फारा

इन पाँच ममनू कामों में से कोई काम गलती से या भूल कर हो जाये तो उस पर कोई कफ्फारा नहीं और जान बूझ कर इन में से किसी का इरतेकाब करे तो उस पर ये कफ्फारा है : तीन दिन रोज़े रखना या छः मिस्कीनो को खाना खिलाना या दम (बकरा ज़बह करना) देना| [(2)]

ममनू काम

6. जंगली जानवर का शिकार करना या शिकार करने में मदद करना|

कफ्फारा

शिकार के बराबर गाय या ऊँट या बकरी को ज़बह करना या उसकी कीमत से गल्ला खरीद कर फी मिस्कीन एक मुद के हिसाब से मसाकीन में तकसीम करना या उसके बराबर रोज़े रखना| [3]

(1) **बुखारी:1814, (2) सूरह बखरह 2:192, (3) सूरह मायिदा 5:95**

ममनू काम

7. मंगनी करना या करवाना, निकाह करना या करवाना|

कफ्फारा

तौबा व इस्तेग्फार करते हुए दोबारा निकाह करना होगा| [1]

ममनू काम

8. बीवी से बोसो किनार करना|

कफ्फारा

तौबा व इस्तेग्फार करना|

ममनू काम

9. बीवी से हमबिस्तरी करना|

कफ्फारा

अगर ये हमबिस्तरी दस तारीख़ को जमरह कुबरा को कंकरियां मारने से पहले थी तो उस का हज बातिल हो जायेगा| बावजूद उसके, हज के बकिया काम पूरे करेगा| एक गाय या ऊँट ज़बह करके फुकरा ए मक्का में तकसीम करना होगा, फिर फ़र्ज़ हज की अदायगी लाजिम होगी और अगर हम बिस्तरी दस तारीख़ को जमरह कुबरा को कंकरियां मारने के बाद की है तो उसका हज तो सही होगा लेकिन उसको दम देना होगा| (2)

नोट : अगर औरत को हालत ए इहराम में हैज़ या निफास वगैरा का खून आ जाये तो वो बैतुल्लाह के तवाफ के अलावा हज व उमरह के बकिया तमाम अरकान व वाजिबात अदा करेगी| (3)

नोट : एक कौल के मुताबिक हैज़ वाली औरत का मस्जिद में बैठना ममनू है, जबके दूसरी तःकीख शेख अल्बानी की ये है कि, हैज़ वाली औरटन को मस्जिद में बैठने से रोकने वाली सारी अहादीस ज़ईफ़ है, लिहाज़ा वो

मस्जिद में बैठ सकती है| राखिमुल हुरूफ़ दूसरे कौल से मुत्तफिक है|

(1) मुस्लिम:1409, (2) मुवत्ता मालिक, किताबुल हज, बाब निकाहुल हरम: 773, (3) बुखारी:1560

हालत ए इहराम में जायज़ काम

1 घुसल करना

2 सर और बदन खुजलाना

3 मरहम पट्टी करवाना, दवायियाँ खाना पीना

4. आँखों में सुरमा या दवा डालना

5. मूज़ी जानवर को मारना

6. इहराम की चादरें बदलना

7. अंगूठी, ऐनक, पर्स और पट्टी या छत्री वगैरा इस्तेमाल करना

8. बगैर खुशबू वाला तेल या साबुन इस्तेमाल करना

9. समंदरी शिकार करना

हज से पहले के काम

1. **अकीदे की इस्लाह करना (याद रहे कि शिर्क व बिदात से अपने आप को बचाते हुए तौहीद और इत्तेबाये सुन्नत का दामन किसी भी कीमत पर न छोड़े)| (सूरह लुक़मान 31:13)**
2. **हज के अहकाम सीखना|** [1]
3. **गुनाहों से तौबा करना|** [2]
4. **कुबूलियत की दुआ करना|** [3]
5. **लोगो के हुकूख हो तो अदा करना|** [4]
6. **घर वालो को वसीयत करना|** [5] **(अगर कोई काबिल वसीयत चीज़ या बात हो)|**
7. **दीनदार लोगो के साथ हज करना|** [6]
8. **निगाहों और ज़बान की हिफाज़त का ख़याल रखना|** [7]
9. **हर काम, सुन्नत के मुताबिक करना|** [8]

10. इबादत में ज़्यादा वक़्त लगाने के इरादे से निकलना| (9)

हज व उमरह के फज़ायेल

1. उमरह, गुनाहों का कफ्फारा है और हज मबरूर का बदला सिर्फ जन्नत है| (10)
2. जिहाद फी सबीलिल्लाह के बाद अफ़ज़ल अमल, हज मबरूर है| (11)
3. हज करने वाला गुनाहों से ऐसे पाक हो जाता है जैसे नौ मौलूद बच्चा| (12)
4. हज व उमरह में मुताबअत से फुकरा व तंगदस्ती और गुनाहों का खात्मा हो जाता है| (13)
5. हज, गुज़िस्ता तमाम गुनाह मिटा देता है| (14)
6. हज और उमरह करने वाले की दुआ कुबूल की जाती है| (15)

7. **हज और उमरह की अदायगी औरत, कमज़ोर, बूढ़े और बच्चे का जिहाद है| (16)**
8. **रमज़ान में उमरह का सवाब हज के बराबर मिलता है| (17)**
9. **हज या उमरह के लिए हालत ए सफ़र में रहने वाला शख्स फौत हो जाये तो उसके लिए मुकम्मिल अजर लिखा जाता है| (18)**

(1) **सहीह इब्ने माजह:184**
(2) **सूरह तहरीम 66:8**
(3) **सूरह बखरह 2:127**
(4) **मुस्लिम:2581, तिरमिज़ी:2418**
(5) **बुखारी:2738, मुस्लिम:1627**
(6) **सूरह तौबह 9:119**
(7) **सूरह नूर 24:30, बुखारी:6807**
(8) **सहीह जामे:7882**
(9) **सूरह बखरह 2:197**
(10) **बुखारी:1773, मुस्लिम:1349**

(11) **बुखारी:1519, मुस्लिम:83**

(12) **बुखारी:1521, मुस्लिम:1350**

(13) **तिरमिज़ी:810 (सहीह)**

(14) **मुस्लिम:121**

(15) **इब्ने माजह:2493 (हसन)**

(16) **बुखारी:1861, सहीह नसाई:2463**

(17) **बुखारी:1863, मुस्लिम:1256**

(18) **सहीह तरगीब:1114**

हज व उमरह की मुकम्मिल दुआयें

इहराम बाँधने की निय्यत

अल्लाहुम्म लब्बैक उम्रतन

या अल्लाह मैं उमरह के लिए हाज़िर हूँ|

अल्लाहुम्म लब्बैक हज्जन

ऐ अल्लाह मैं हज के लिए हाज़िर हूँ|

नियत के वक़्त ये दुआ भी पढें

अल्लाहुम्म हज्जतन ला रिया फीहा वला सुमह

ऐ अल्लाह ! हज से न दिखावा मक़सूद है न शोहरत मतलूब है|

तल्बिया

लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन नेमत, लक वल मुल्क, ला शरीक लक

मैं हाज़िर हूँ, या अल्लाह! मैं तेरी जनाब में हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं है, मैं हाज़िर हूँ, तमाम तारीफेन तेरे लिए ही है, और तमाम नेमतें तेरी ही जानिब से है, सारी कायनात में तेरी ही बादशाहत है, तेरा कोई शरीक नहीं है|

काबा देख कर ये दुआ पढें

अल्लाहुम्म अंतस सलाम व मिन्कस सलाम फहय्यिना रब्बना बिस सलाम

या अल्लाह! तू सरापा सलामती वाला है, और तेरी ही जानिब से सलामती है, तो ऐ मेरे रब! जिस्म व रूह की सलामती के साथ हमें जीने की तौफीक़ दे|

मस्जिद (काबेतुल्लाह) में दाखिल होते वक़्त की दुआ

अऊज़ू बिल्लाहिल अज़ीम व बिवजहिहिल करीम व सुल्तानिहिल क़दीम मिनश्शैतान निर्रजीम

मैं अज़मत वाले अल्लाह, उसके करम वाली ज़ात और उसके अज़ली व अबदी क़ुव्वत व शौकत के ज़रिये शैतान मरदूद से पनाह चाहता हूँ|

बिस्मिल्लाही वस्सलामु अला रसूलिल्लाह,
अल्लाहुम्मग़फिरली ज़ुनूबी वफ़तह ली अब्वाब रह्मतिक

अल्लाह के नाम से और ﷺ पर सलाम भेजते हुए मस्जिद में दाखिल होता हूँ, या अल्लाह! मेरे गुनाह माफ़ कर दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे|

मस्जिद (काबेतुल्लाह) से निकलते वक़्त की दुआ

बिस्मिल्लाही वस्सलामु अला रसूलिल्लाह,
अल्लाहुम्मग़फिरली ज़ुनूबी वफ़तह ली अब्वाब फज़लिक

अल्लाह के नाम से और ﷺ पर सलाम भेजते हुए मस्जिद में निकलता हूँ, या अल्लाह! मेरे गुनाह माफ़ कर दे और मेरे लिए अपने फज़ल व रिज़क के दरवाज़े खोल दे|

हजरे अस्वद के छूते या इशारा करते (इस्तेलाम के) वक़्त की दुआ

बिस्मिल्लाही अल्लाहु अकबर

शुरू अल्लाह के नाम से, अल्लाह सब से बड़ा है|

रुकने यमनी और हजरे अस्वद के दरमियान पढ़ी जाने वाली दुआ

रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतव वफिल आखिरति हसनतव वखिना अज़ाबन्नार

ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में नेकी दे और आखिरत में भी भलाई अता फरमा और हमें अज़ाबे जहन्नम से नजात दे|

सफा पहाड़ पर चढ़ते हुए ये दुआ पढें

इन्नस सफा वल मरवत मिन शआ इरिल्लाह फ़मन हज्जल बैत औ तमर फला जुनाहा अलैहिय्य-यत्तव्वफा बिहिमा वमन ततव्वा खैरन फ-इन्नल्लाहा शाकिरून अलीम

सफा और मरवा अल्लाह ताला की निशानियों में से है, इसलिए बैतुल्लाह का हज व उमरह करने वाले पर इनका तवाफ़ कर लेने में भी कोई गुनाह नहीं, अपनी ख़ुशी से

भलाई करने वालो का अल्लाह कदरदान है और उन्हें खूब जानने वाला है|

फिर ये अलफ़ाज़ कहे

अबदऊ बिमा बदा अल्लाहु बिह

मैं उसी से शुरू करता हूँ, जिस से अल्लाह ताला ने शुरू किया है|

सफा पहाड़ी पर चढ़ कर क़िबला रुख हो कर तीन मरतबा ये कलिमात कहे

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह दहू ला शरीक लहू लहुल मुल्क व लहुल हम्दु युह्यी व युमीतु, वहुव अला कुल्ली शैइन क़दीर, ला इलाहा इल्लल्लाहु वह दहू, अन्जज़ा वादह, व नसर अब्दह, व हज़मल अह्ज़ाबा वह्दह

अल्लाह के अलावा कोई माबूद बरहक़ नहीं, वो एकता है, उसका कोई साझी नहीं है, बादशाहत उसी की है, तमाम

किसम की तारीफें उसी के लिए है, वो हर चीज़ पर कुदरत रखता है, उसके अलावा कोई भी माबूद हक़ीक़ी नहीं है, वो अकेला है, उसने अपना किया हुआ वादा पूरा किया, अपने मानने वाले बन्दे (मुहम्मद ﷺ) की मदद व नुसरत की, और अपने दीन की मुक़ालिफत करने वालो को उसी अकेले ने शिकस्त दी|

सई के दौरान ये दुआ पढ़े

रब्बिग़ फिर वरहम इन्नक अंतल आज्ज़ुल अकरम

मेरे रब ! मेरी मग़फिरत कर और मुझ पर रहम कर, क्यों के तू सब से ज़्यादा इज्ज़त व करम वाला है|

वुखूफे अरफह की दुआयें

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह दहू ला शरीक लहू लहुल मुल्क व लहुल हम्दु, वहुव अला कुल्ली शैइन क़दीर

अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, वो एकता और अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं है, इस कायनात की बादशाहत उसी की है, तमाम तारीफें उसी को सज़ावार है और वो हर चीज़ पर कुदरत रखता है|

इन्नमल खैरु खैरुल आखिरह

बिला शुबा हक़ीक़ी भलाई तो आखिरत की भलाई है|

बक़ीउल ग़रक़द (क़बरस्तान) में दाखिल होते वक़्त की दुआ

अस्सलामु अलैकुम अह्लद-दियार मिनल मोमिनीन वल मुस्लिमीन, व इन्ना इन-शा-अल्लाहु बिकुम ललाहिकून (व यरहमुल्लाहुल मुस्तक़दिमीन मिन्ना वल मुस्ताखिरीन)
अस अलुल्लाहु लना वलकुमुल आफियह

इन घरों (क़बरों) के मोमिन और मुसलमान मकीनो ! तुम पर सलाम हो और बिला शुबा अगर अल्लाह ने चाहा तो

हम भी तुम से ज़रूर मिलने वाले है| और हम में से पहले जाने वालो पर और बाद में जाने वालो पर अल्लाह रहम फरमाये| मैं अल्लाह से अपने और तुम्हारे लिए आफियत का सवाल करता हूँ|